www.faithbook.in

Faithbook™
ACTIVITIES BEYOND BOOK

04th APR 2021
Issue 12

BOOK 024

घायल तो यहाँ हर एक परिंदा है,
मगर जो फिर से उड़ सका वहीं ज़िन्दा है...

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

सुविचारों की चहल-पहल

सादर प्रणाम,

कुदरत का नियम है 'जो चीज अच्छी हो वो सहज खराब हो सकती है। अगर बगिया का ध्यान नहीं रखा तो वह मुरझा जाता है, किंतु कुडा-कर्कट की और ध्यान नहीं दिया तो वह और गंदगी फैलाता है। बगिया की देखभाल लेने से उसकी वृद्धि निश्चित है।'

उसी तरह मन के भीतर भी सुविचारों की चहल पहल बनाए रखने के लिए व कुविचारों को दुर रखने के लिए उसकी देखभाल जरुरी है। Faithbook के द्वारा हम सभी के मन एवं व्यक्तित्व को स्वस्थ, सुंदर और सौम्य बनाने का प्रयास महात्माओं द्वारा लिखित लेखों द्वारा चल रहा है।

शुरुआत के 8 अंको में प्रकाशित लेखमाला 2 पुस्तकों में संग्रहीत करके उसकी OpenBook Online Exam होने जा रही है! सभी से अनुरोध है कि इसका अवश्य लाभ उठावें और सम्यग्ज्ञान में वृद्धि करके आत्मकल्याण साध्य करें!!

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

अजीबों-गरीब और विचित्र Scheme 01
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

मैं धर्मनिष्ठ श्री कृष्ण 05
पू. आ. श्री आत्मदर्शन सूरिजी म.सा.

प्रभु का जन्म : शरीर और आत्मा का मिलन 09
पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 6.0 11
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

संघ मेरा स्वामी 14
प्रियम्

Young mind for better change 18
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

ब्रह्मचर्य का पूर्ण सत्य 22
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

दिव्य प्रेम 24
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 11 26
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

जिनशासन का हृदय 30
जैन प्रोफेसर तन्मयभाई एल. शाह

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

अजीबों-गरीब और विचित्र Scheme

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

जिसे जितनी लोन चाहिए उतनी ले जाइये, किसी भी पहचान पत्र या दस्तावेज आदि की जरूरत नहीं है। इस भव में ना तो रकम वापस करनी है, ना ही ब्याज देना है; लेकिन पर (दूसरे) भव में पठानी ब्याज के साथ सब कुछ भरपाई कर देना होगा। इस बात का एक दस्तावेज भी दस्तखत करके देना होगा। ऐसी अजीबों-गरीब और विचित्र scheme प्रस्तुत करने वाले आस्तिक धनाढ्य की हम पिछले लेख में बात कर रहे थे।

दूर-दूर के शहरों में पहुँच चुकी इस योजना की बात सुनकर चार चोर आपस में चर्चा करने लगे, 'हमें रोज पकड़े जाने का डर रहता है। समाज में हमारे परिवार कलंकित हो गये हैं, और फिर भी चाहिये उतना माल तो मिलता ही नहीं है। तो उससे अच्छा पाप का यह धंधा छोड़कर उस सेठ के पास चलते हैं, उससे हम चारों 1-1 लाख रूपये की लोन लेकर कोई अच्छा धंधा शुरू करते हैं। कुछ भी वापस नहीं करना है, इसलिए किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता है ही नहीं।

चारों चोर परस्पर सहमत हुए। अपने गाँव से लंबा सफर करके इस सेठजी के पास आये। एक-एक लाख की लोन की माँग की।

सेठ : शर्त पता है ना?

चोर : हाँ पता है।

सेठ : तो करो दस्तावेज पर दस्तखत, और ले

जाओ लाख-लाख रूपया। करार हो गया। चोरों को रूपये मिल गये। चारों बहुत खुश थे। तरह-तरह के मनोरथों का महल चुनना शुरू हो गया, और उन्होंने अपने गांव वापस जाने के लिए प्रवास शुरु कर दिया।

लंबी मंजिल काटनी थी, अंधेरा होने को था। सेठ जी के पास आते समय तो किसी भी प्रकार का डर या चिन्ता नहीं थी। उस समय रात को भी थोड़ा प्रवास कर लिया था। पर अभी सब के पास लाख-लाख रुपये का जोखिम था। रात को आगे बढ़ने में डर लग रहा था, चिन्ता होने लगी। (आपको भी अपने आपसे प्रश्न पूछना चाहिये कि, धनसंपत्ति 'जोखिम' है? यह निर्भयता और निश्चिंतता लाती है या भयभीतता और चिन्ता लाती है?)

योगानुयोग नजदीक में ही एक गाँव आया, इसलिए चारों ने उस गाँव में रात बिताने का निर्णय किया। पर अजनबियों को कौन आश्रय देगा? और जहाँ-तहाँ तो रुक नहीं सकते थे, फिर भी खोजबीन जारी रखी। तो एक घांची अपनी घानी (कोल्हू) बंद करके दुकान बंद करने की तैयारी में था। उन्होंने उसको एक रात रुकने के लिए जगह देने की विनती की। घांची ने कहाँ कि देखिये यहाँ नीचे तो मेरे ये दो बैल है, ऊपर एक मालिये जैसा बना है। उसके उपर सोना हो तो सो सकते हो, रात को यहाँ कोई नहीं आता है।

उन चोरों को यह जगह safe लगी, वे वहाँ रुक गये। घांची अपने घर के लिए रवाना हो गया।

चोरों ने अपनी सात पीढ़ियाँ मिलाकर ना देखा हो उतना धन हर एक के पास था, इस बात का एक तरफ उन्हें बहुत आनंद था, तो दूसरी ओर जगह safe होने पर भी चिन्ता और डर मन को सता रहे थे। इसलिए बार-बार नींद आती, और चली जाती थी। इस प्रकार रात आगे बढ़ रही थी, सबसे छोटे चोर को बिल्कुल नींद नहीं आ रही थी। वह पशुओं की भाषा का जानकार था। उसे आभास हुआ कि दो बैल परस्पर बातें कर रहे थे। उस चोर ने अपने कानों को तेज कर दिया।

एक बैल (A) दूसरे बैल को (B) कह रहा था कि, 'दोस्त! तू तो भाग्यशाली है, तेरा इस घांची का पूर्व जन्म का कर्ज अब सिर्फ दो आना बाकी है। हम हड्डियाँ और शरिर के जोड़ो को तोड़-तोड़कर 2/3 घंटे में किसी ग्राहक का तेल कुचल देंगे। घांची को चार आना मजदूरी मिल जायेगी, उससे तेरा और मेरा दोनों का दो-दो आना कर्ज चुकता हो जायेगा। उसमें तेरा संपूर्ण कर्ज ब्याज समेत अदा हो जाने से तेरा छुटकारा हो जायेगा। पर मेरा तो छुटकारा कब होगा? भगवान जाने। अभी और इस घांची की कोल्हू में मुझे कितना पिसना पड़ेगा? इस विचार से भी आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है।

B : मित्र अब तेरा कितना कर्ज बाकी बचा है?

A : 100 रूपये, घांची को रोज 48 आना मजदूरी मिलती है, उसमें आधा तो दूसरे बैल का चुकता होता है। मेरे तो 2-4 आना ही चुकता होते है। इस तरह से 100 रूपये कब पूरे होंगे और कब मेरा छुटकारा होगा? कुछ कह नहीं सकते।

B : यार! कर्ज चुकाने का और कोई उपाय नहीं है?

A : है, पर next to impossible है।

B : कौन-सा उपाय है? तू मुझे बता तो सही!!

A : यदि राजा के पद्महस्ति के साथ मेरी कुस्ती हो जाये, और उसमें शर्त रखी जाये कि जो हारे उसके मालिक को जो जीते उसका मालिक 100 रुपये देने होंगे। और यदि मैं उस हाथी को हरा देता हूँ, तो उस घांची को 100 रुपये मिल जायेंगे, मेरा कर्ज पूरा हो जायेगा, मेरा छुटकारा हो जायेगा।

B : पर तू पद्महस्ति को जीत सकेगा?

A : हाँ! जान पर खेलकर जीत लूँगा।

B : पर तुझे हाथी के साथ भिड़ाने का विचार और उसमें 100 रुपये की शर्त लगाने का विचार सिर्फ घांची को ही नहीं; पूरी दुनिया में किसी को भी आना संभव नहीं है। शायद किसी को यह विचार आ भी जाये तो घांची उसके लिए तैयार भी नहीं होगा। अपना बैल मर जाये और ऊपर से 100 रुपये चुकाने पड़ेंगे, घांची इतना मूर्ख नहीं है।

A : प्यारे! तेरी बात बिलकुल सच है, इसीलिए मुझे तो अभी बहुत समय तक यह मजदूरी करनी है।

इतना कहकर A ने लंबी साँस ली।

छोटा चोर ये सारी बातें सुन रहा था। ये दोनों बैल परस्पर गप्पे हाँक रहे हैं, या ये सारी बातें सच हैं? और यदि सच होगी तो ब्याज के साथ एक लाख रुपये चुकाने के लिए कितने जन्म घांची के कोल्हू का बैल बनना पड़ेगा? इस विचार से वह काँप उठा। उसने तय कर लिया कि सुबह होने पर यहाँ से निकलना नहीं है, बल्कि क्या हो रहा है? वह देखना है कि यह सब बातें सच्ची है या झूठी?

सुबह हुई। दूसरे चोर आगे के प्रवास के लिए तैयार हो गये। पर इस छोटे चोर ने मना कर दिया। हालांकि उसने किसी को इसका कारण नहीं बताया, लेकिन जिद करके एक दिन यहाँ पर ही रुकने के लिए बाकी के तीन चोरों को समझा लिया।

सभी रुक गये। घानी शुरू करने के समय होने पर घांची आ पहुँचा। कुछ ही देर में कोई ग्राहक आया। उसने अपने तिल कुचलने के लिए दिये। दोनों बैलों की मजदूरी शुरू हो गई। तीन घंटे के बाद सभी तिल कुचल गये। ग्राहक ने घांची के हाथ में चारा आने दिये। और बिना किसी भी कारण के दूसरा बैल (B) धरती पर गिर पड़ा। नहीं, सिर्फ गिर ही नहीं पड़ा उसके प्राण पखेरु भी उड़ गये। घांची की गुलामी से उसका छुटकारा हो गया।

यह देखकर छोटा चोर चौंक उठा। फिर सोचा, कि ये शायद योगानुयोग होगा तो? इसलिए दूसरी घटना का भी समाधान पाने का उसने निर्णय किया।

बिना कारण अचानक से बैल के मर जाने से घांची को गहरा सदमा लगा। और आज तक बैल ने जो सेवा की थी उसके मन में आज घानी बंद रखने का निर्णय करके उसने घनी बंद कर दी।

इसलिए बैल भी free हो जाने के कारण छोटे चोर ने घांची को बहुत आग्रह पूर्वक कहा कि तेरे इस बैल को मैं नदी पर स्नान करा लाता हूँ। थोड़ी हाँ-ना करने के बाद घांची ने इजाजत दे दी।

छोटा चोर बैल को लेकर नदी की ओर जा रहा था। योगानुयोग उसी समय राजा के पद्महस्ति को नदी पर स्नान करवा के महावत वापस जा रहा था।

यह देखकर छोटा चोर बैल को रास्ते के बराबर बीच में चलाने लगा। महावत ने चोर को ललकारा, ओ! तेरे इस बैल को रास्ते के किनारे चला, और पद्महस्ति को मार्ग दे। चोर ने सुना अनसुना कर दिया। महावत ने फिर से राजशाही सुर में कहा; 'तेरे बैल को किनारे पर ले, वरना ये हाथी उसे कुचल डालेगा। तो चोर ने महावत से कहा, तेरे हाथी को हटा, वरना ये बैल उसे पूरा कर देगा।

महावत झुकने को तैयार नहीं था क्योंकि, उसमें खुद का, राजा का और हाथी का अपमान था! चोर भी अपनी बात छोड़ने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह तो सारे आंकड़े मिलाने के लिए इस पार या उस पार करने को तैयार था।

बात बढ़ गई। चोर ने महावत को कहा; हम शर्त लगाते हैं। हाथी और बैल को आमने-सामने भिड़वाते हैं। हाथी जीत जाये तो तुम मुझे 100 रूपये दोगे, और हारे तो मैं दूँगा। महावत परेशानी में पड़ गया। उसने राजा को समाचार भिजवाये। राजा को भी कुतूहल हुआ। वह स्वयं वहाँ आया। घांची को भी समाचार मिल गये, वह भी भागते-भागते वहाँ आया और चोर को कहने लगा, मुझे मेरा बैल गँवाना नहीं है। तू ये शर्त मत लगा। पर चोर ने उसे समझाया कि बैल हार भी जायेगा, मर जायेगा, तो भी मैं 100 रूपये तुम्हें दूँगा, और तेरे बैल की कीमत से ज्यादा रकम तुझे दूँगा, तू नया बैल ला सकेगा।

राजा और चोर के बीच शर्त लग गई। बैल और हाथी दोनों एक दूसरे को पटकने के लिए घमासान करने लगे। पर बैल ने जान की बाजी लगाकर हाथी को पटक दिया और खुद हाथी के उपर चढ़ गया।

हाथी हारा, बैल जीत गया। राजा 100 रूपये चोर को देने लगा, तो चोर ने कहा, 'राजन! बैल इस घांची का है, इसलिए 100 रूपये उसे दीजिये। जैसे ही घांची के हाथ में 100 रूपये आये, कि दूसरी ही क्षण बैल जमीन पर गिरा और उसकी मृत्यु हो गयी। वह घांची की गुलामी से मुक्त हो गया।

कर्ज चुकाने की बात अक्षरश: सच हुई जानकर चोर की आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसने अपने तीनों साथियों को सारी बात बतायी। चारों ने तय किया कि लाख-लाख रूपये के कर्ज के साथ परलोक में नहीं जाना है। जन्मों जन्मों घांची के बैल या भरूच के पाड़े बनकर उस कर्ज को चुकाने की हमारी औकात (शक्ति) नहीं है।

चारों चोर सेठ के पास वापिस आये। आप के दिए हुए यह ये लाख-लाख रूपये वापस ले लीजिये, और हमें कर्ज से मुक्त कर दीजिये। लेकिन सेठ ने मना कर दिया, 'मैं तो परलोक में ही वापस लूंगा।' आखिर में मामला राजा के पास पहुँचा, लेकिन राजा ने सेठ के पक्ष में निर्णय किया कि, जो करार हुआ है वह सोच-समझकर किया है। अब आप सब मुकर जाओगे तो नहीं चलेगा।

पर चोरों को अब ये रूपये भारी जंजाल जैसे लग रहे थे। किसी भी हालत में इस भार को रखने के लिए वे तैयार नहीं थे। सेठ और राजा नहीं माने, तो वे एक संत की शरण में गये।

संत ने क्या सलाह दी? यह हम आगामी लेख में देखेंगे।

मैं धर्मनिष्ठ श्री कृष्ण

पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरिजी म.सा.

आज से 100 वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेम-चंद्राचार्य हुए थे। उन्होंने त्रिषष्टि-शलाकापुरुष चरित्र के आठवें पर्व में 22वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान का तथा श्री कृष्ण का जीवनचरित्र लिखा। उस ग्रंथ में उन्होंने पांड़वो का भी वर्णन किया है। जैन मत के अनुसार परमात्मा नेमि-नाथजी को और श्री कृष्ण को हुए आज तकरीबन 8700 वर्ष बीत चुके है। दोनें समकालीन थे, चचेरे भाई थे। जिसके बारे में हम आगे विचार करेंगे।

वि.सं. 1250 की साल में देवप्रभसूरिजी नाम के जैनाचार्यने पांड़वचरित्र लिखा।

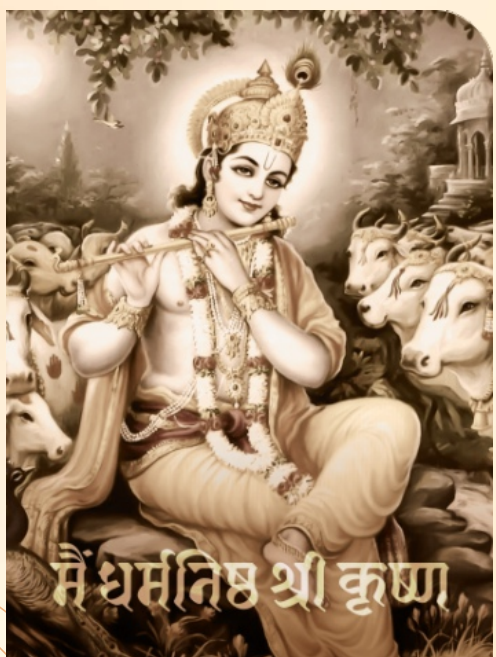

मैं कृष्ण...

मेरी माता देवकी मुझसे पहले हुए छः पुत्रों को दुलार करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकी थी। उसकी अदम्य इच्छा जानकर मैंने देव-साधना की, और इससे देवकी को आठवाँ पुत्र प्राप्त हुआ, जिसका नाम गजसुकुमाल था।

सोमा नामक अति रूपवान ब्राह्मण कन्या के साथ मेरे प्यारे से छोटे भाई गजसुकुमाल का संबंध बाँधा गया था। परंतु परमात्मा नेमिनाथ जी की एक ही देशना को सुनकर संसार से अत्यंत विरक्त होकर गजसुकुमाल ने तुरंत ही माता देवकी को मनाकर दीक्षा ले ली थी। संयमजीवन के अल्प-काल में ही मुनि गजसुकुमाल सोमा के पिता सोमशर्मा के क्रोध की बलि चढ़ गये थे। सिर पर सुलगते अंगारे भरकर ध्यानस्थ गजसुकुमाल मुनि को उसने जिंदा सुलगा दिया था। मोक्ष की पघड़ी बाँधने वाले श्वसुर का उपकार मानते हुए वे मुनि कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में सिधारे थे। जिससे वैरागित होकर मेरी अनेक पट्टरानीयाँ और राजकुमारी राजीमती आदि हजारों आत्मायें संसार से विरक्त होकर दीक्षित बन गये थे।

मेरे पिता वसुदेव पूर्वभव में अपूर्व वेयावच्ची नंदि-षेण मुनि थे। उस भव के तप-जप और वेयावच्च की अपूर्व साधना के बदले अंत समय में उन्होंने

हजारों ललनाएँ अपने पीछे पागल हो जायें वैसे रूप की प्राप्ति का नियाणा बाँधकर जुआ खेला। इसीलिए ही वासुदेव अति सुंदर रूपवान राज-कुमार थे। उनके पीछे हजारों युवतियाँ दीवानी रहती थीं। उनका पुत्र मैं कृष्ण और उनकी बहन कुन्ती मेरी बुआ लगती थी, जो पांड़वो की माता थी।

मैं कृष्ण...

इस भरत क्षेत्र में होने वाले आगामी तीर्थंकर देवों की चौबीसी में 12वें तीर्थंकर 'अमम' बनने का सौभाग्य मेरे सिर पर लिखा गया है। वर्तमान में मैं विशिष्ट कोटि का धर्मात्मा तो था ही, परंतु कुछ संयोगवश कर्मात्मा भी था। उभय स्वरुप मिश्रित मैं सम्यग्दृष्टि था। सम्यग्दर्शन भी उत्कृष्ट कक्षा के क्षायिकभाव का था।

मैं परमात्मा नेमिनाथ का परम भक्त होने के कारण मोक्ष पाने के एक मात्र लक्ष्यवाला था, और चारित्रधर्म जीवन का ही एक मात्र पक्षधर था। इस लक्ष-पक्ष के कारण एक बार मैंने अठारह हजार मुनिओं को वंदन किया था। मैंने मेरे राज्य में घोषणा करवाई थी कि माता पितादि की आजीविका की चिंता से यदि किसी धर्मात्मा की दीक्षा नहीं हो सकती हो तो उसे आजीविका की चिंता से सर्वथा मुक्त कर दूँगा।

इसके परिणाम से ढ़ेर सारे परिवारों में युवक-युवतियों की दीक्षा हुई थी।

यौवन की दहलीज पर कदम रखने वाली तमाम सुपुत्रियों को मैं सवाल करता था कि, 'पुत्री! तुझे रानी बनना है या दासी?' बेटी कहती थी कि, 'पिताजी! मुझे तो रानी ही बनना होगा ना?' 'तो बेटी! तू परमात्मा नेमिनाथजी के पास जाकर दीक्षा ग्रहण कर ले।' ऐसा कहकर मैं हर एक सुपुत्री को संयम-मार्ग की ओर ले जाता था।

मैं आत्मश्लाघा नहीं करना चाहता, पर यदि आप मेरे जीवन में गहराइयों में झाँककर देखेंगे तो आपको दिखेगा कि मैं असीम गुणों का स्वामी था। ये गुण भी मेरे गुणानुराग की वजह से मुझ में आये थे।

एक बार मैं हाथी पर बैठकर मैं राजमार्ग से गुजर रहा था। रस्ते पर मैंने एक मरी हुई, अत्यंत बदबूदार, भयंकर जुगुप्सनीय हड़काई कुत्ती का अस्थिपिंजर देखा, तो उसके दूध जैसे सफेद-मोतियों जैसे चमकते दांत देखकर आनंदविभोर होकर बोल पड़ा था कि 'अहो! कितनी सुंदर दंतपंक्ति है!' हकीकत में यह दैवी-माया थी। इसीलिए देव ने प्रसन्न होकर मुझ से कुछ माँगने को कहा, मैंने क्या माँगा, पता है?

'रोगीजनों की रोगमुक्ति'

देव ने मुझे एक नगाड़ा दिया, जिसकी आवाज सुनने से रोगियों के रोग शांत प्रायः हो जायेंगे - ऐसा उसने कहा।

हर छः महीनों में यह नगाड़ा बजाने पर हजारों रोगियों के रोग शांत हो जाते थे। यह देखकर मेरी आत्मा आनंद से नाच उठती थी, मेरी आँखे हर्षाश्रु से छलक उठती थी।

तीर्थंकरों की आत्मा का यही तो स्वभाव होता है! वे दुःखीजनों को देखकर दुःखार्त हो जाते हैं, पापियों को देखकर उनको पापमुक्त कर देने की भावना से रच-पच हो जाते है। पूर्व भव के किसी भी भव में वे ऐसी असीम करूणा भावना से छलकते होते है

मैं एक बार जंगल में हाथी पर बैठकर जा रहा था, वहाँ एक वृद्ध रस्ते से गुजर रहा। उसे अपना एक छोटा सा मकान बनाना था। गरीब होने के कारण

एक-एक ईंट खुद उठाकर निश्चित जगह पर रखता था। लंबे अंतर के कारण वह अत्यंत हाँफ रहा था। उसे बार-बार बीच में विराम लेना पड़ता था। यह सब देखकर में दयार्द्र हो गया। त्रिखंडाधिपति के मेरे पद को भूलकर हाथी से उतरकर मैं खुद एक ईंट उठाकर चलने लगा। यह देखकर मेरे साथ के हजारों लोग एक-एक ईंट उठाकर चलने लगे। उस बूढ़े का काम पूरा हो गया। उसके चेहरे का आनंद देखकर मैं हर्षविभोर हो गया।

ऐसी विराट करुणा के कारण ही मैंने कुरुवंश के युद्ध को अंत तक रोकने के लिए सख्त प्रयत्न किये थे। यदि मैं पांड़वपक्ष में नहीं होता, मेरे दाव पेंचों की प्रचंड़ बुद्धिमत्ता नहीं होती तो मेरे बिना अर्जुन कर्ण को नहीं जीत सकता था। कृष्ण-नीति से ही, मतलब कि मेरी कुनेह से ही कर्ण को जीता गया था।

मेरे पास सम्यग्ज्ञान था, इसलिए युद्ध जनित संहार की कल्पना से मैं बराबर वाकिफ ही था, फिर भी नियति के आगे मुझे भी झुकना पड़ा। एक महा-संहार (महाभारत) का तांड़व खेला गया।

सम्यग्दृष्टि जीवों को भोगों को भुगतना पड़ता है, युद्ध करने पड़ते हैं। लेकिन वे उनमें तीव्रता से आसक्त नहीं बनते, इसीलिए उन्हें अनासक्त कर्म-योगी कहते हैं।

बेशक 'जैसे के साथ तैसा', यह मेरी कृष्णनीति थी। अर्जुन के रथ के सफल सारथि के रूप में कुरुक्षेत्र में मैं पांडवों को विजय दिला सका था। पर अंदरोंदर यादवों के कलह को तो सख्त प्रयत्न करने के बाद भी मिटा नहीं सका था।

जीवन की ढलती संध्या में तो जैसे कि मेरा पुण्य खत्म ही हो गया था। द्वारिका का दहन हो गया, रथ में बैठकर भागने पर घोड़े की लगाम टूट गई, लाचार होकर माँ-बाप को भी बेसहारा छोड़ना पड़ा, बड़े भाई बलदेव को लेकर निकलना पड़ा। रस्ते में सख्त भूख लगी, तो बलदेव ने हाथ में पहने हुए कड़े को बेचकर भोजन का प्रबंध किया। भोजन के साथ क्षार प्रधान सूरा का सेवन करने से पानी की सख्त प्यास लगी। बलदेव पानी की तलाश में निकले। उस दरमियान मैं सफेद कंबल ओढ़कर किसी वृक्ष के नीचे पैर पर पैर चढ़ाकर सो गया। और, मेरे ही चचेरे भाई जराकुमार ने मुझे हरिण समझकर ज़हर लेपित बाण मुझ पर छोड़ा, जो मेरे पैर के आर-पार हो गया।

सख्त पानी की प्यास और सख्त पीड़ा के बीच द्वैपायन ऋषि के द्वारा सुलगायी हुई द्वारिका नजर समक्ष छाने लगी। द्वैपायन के पेट को चीरकर उसके उदर में से द्वारिका की ऋद्धि को बाहर लाने के रौद्रध्यान और कृष्ण लेश्या के बीच मेरी करुण मौत हो गई। कैसी बेमौत!

त्रिखंडाधिपति तीसरी नरक में पहुँच गया।

धर्मात्मा, भावी तीर्थंकर की आत्मा को भी कर्मों ने नहीं छोड़ा।

क्या पता! कुरुक्षेत्र के मैदान पर गीता की रचना हुई थी या नहीं? जो हुआ वो। परंतु एक बात तय है कि, उस गीता के द्वारा जगत को दो जबरदस्त उपदेश मिले। मानवजगत के लिए यह अत्यंत उपयोगी भी है।

1. पहला उपदेश :

अहंकार छोड़ने के द्वारा यशकीर्ति की आसक्ति का त्याग करना चाहिये।

2. दूसरा उपदेश :

सहजता से स्वधर्म का पालन करना चाहिये। यही गीता का सार है!

जीव में दो प्रकार की आसक्ति होती है। रावण की तरह "पर में आसक्ति" और दुर्योधन की तरह "स्व में आसक्ति"। अपने ऊपर आसक्ति 'मद' से आती है, और दूसरों पर आसक्ति 'मदन' से आती है। जिसमें अहंकार है वो ही खुद में आसक्त होता है। उनको अपनी छवि बहुत प्यारी होती है। ऐसे इन्सान अपने स्वधर्म का अच्छी तरह पालन नहीं कर सकते।

स्वधर्म यानि औचित्य। उनका पालन सभी को करना चाहिये। पिता के रूप में पुत्र के लिए जो औचित्य होता है उसे पिता को पालना ही चाहिये। इस प्रकार पति-पत्नी, माँ-बेटी, साधु-संसारी, अतिथि, राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, शेठ-नौकर आदि सभी के स्वधर्म होते हैं। स्वधर्मों से भ्रष्ट नहीं होना चाहिये, यह बहुत बड़ा अधर्म है।

स्वधर्मों का पालन करना लौकिक सौंदर्य है, धर्म की बुनियाद है।

धर्म का आचरण, लोकोत्तर सौंदर्य है, जो मोक्ष की बुनियाद है।

स्वधर्म प्रथम है, भले ही धर्म मुख्य हो।

श्री कृष्ण (मैंने) ने गीता द्वारा अर्जुन को दो बातें बतायी:

1. तेरी 'छवि' (यश) की आसक्ति को तोड़ ड़ाल।

2. क्षत्रिय के रुप के तेरे स्वधर्म का पालन कर।

इन दो चीजों के निराकरण के लिए, कहा जाता है कि जो उपदेश 700 श्लोकों में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया वही 'गीता' है। धर्म तो बेशक श्रेष्ठ है, पर इससे स्वधर्मों की उपेक्षा थोड़े ही कर सकते हैं! प्राथमिक कक्षा का धर्म तो स्वधर्मों का पालन ही है। उसके बिना लोकोत्तर सौंदर्य कैसे प्राप्त हो सकता है?

'संभवामि युगे युगे' का प्रण लेकर बैठे हुए कृष्ण!

आप कहाँ अवतार लेते हैं? धरती के सैंकड़ों अर्जुन आप के बिना हतप्रभ होकर, सर पर हाथ रखकर, दूर-सुदूर क्षितिज पर, आँखे तककर, निराश वदन से बैठे हैं। बेशक, आपके अवतरण होने में एक बहुत बड़ा विघ्न तो खड़ा ही है। कहीं आपका गर्भपात ना हो जाये।

पर इस अर्जुन को हिम्मत देने वाले श्री कृष्ण! आप स्वयं हिम्मत मत हार जाना। वर्ना हम सभी की क्या हालत होगी!

जिनाज्ञा विरुद्ध, ग्रंथकार विरुद्ध, कहीं भी, कुछ भी लिखा गया हो तो

मिच्छामि दुक्कडम्।

मुख्य आधार : युगप्रधान आचार्यसम प.पू. पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखर विजयजी महाराज

...इति श्री महाभारत कथा - पात्रालेखन...

प्रभु का जन्म : शरीर और आत्मा का मिलन

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

प्रभु महावीर माता त्रिशला रानी के गर्भावास से, शरीर से पूर्ण निष्पन्न होकर निष्क्रमण प्राप्त करने को हैं, जन्म होने को है...

और पूरा ब्रह्मांड सुखद ऊर्जाओं से परिव्याप्त हो रहा है,
चन्द्र की निर्मल ज्योत्स्नाओं से सृष्टि पर अमृत बरस रहा है,
अकारण आनंद का अखंड-पट आकाश में व्याप्त हो रहा है,
चारों गतियों के जीवों का हृदय आह्लाद के स्पर्श से रोमांचित हो रहा है।

प्रकृति का यह सब उत्सव स्वयंभू हो रहा था,
क्योंकि स्वयं में स्वयं ढल जाने वाले
प्रभु का पृथ्वी पर परम अवतरण हो रहा था।

मध्यरात्रि में जब जन्म हो रहा था
तब प्रभु जान रहे थे कि शरीर बाहर आ रहा है,
मैं नहीं;
शरीर के जन्म को प्रभु ने उस अस्तित्व पर रह कर देखा,
जो शरीर नहीं था, जो मन भी नहीं था,
जो संवेदनाएँ भी नहीं थीं,
जिधर जन्म या मृत्यु कुछ नहीं है सिर्फ अखंड जीवन है।

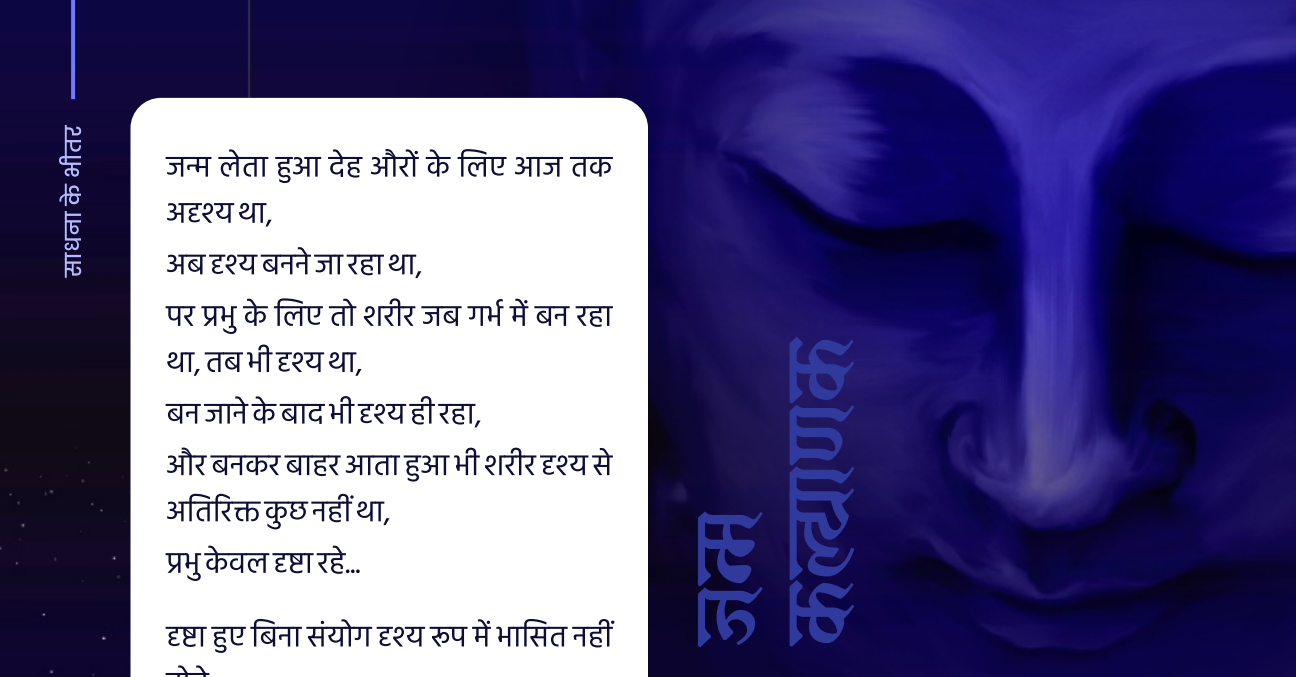

जन्म कल्याणक

जन्म लेता हुआ देह औरों के लिए आज तक अदृश्य था,
अब दृश्य बनने जा रहा था,
पर प्रभु के लिए तो शरीर जब गर्भ में बन रहा था, तब भी दृश्य था,
बन जाने के बाद भी दृश्य ही रहा,
और बनकर बाहर आता हुआ भी शरीर दृश्य से अतिरिक्त कुछ नहीं था,
प्रभु केवल द्दष्टा रहे...

द्दष्टा हुए बिना संयोग दृश्य रूप में भासित नहीं होते,
संयोग को संबंध के रूप में महसूस नहीं करते,
मात्र दृश्य के रूप में ही जानना
शुद्ध-द्दष्टाभाव के बिना संभव नहीं है।

शरीर में जन्म होने की प्रक्रिया चल रही थी,
और प्रभु में वह प्रक्रिया ज्ञात होने की प्रक्रिया चल रही थी,
दोनों स्वतंत्र रूप से भिन्न हैं,
दोनों के बीच कोई मिलावट नहीं है,
जब मिलावट ही नहीं हो, तो 'दो' भी कहाँ बचेगा?
'दो' का अस्तित्व मिलावट ही तो है,
यहां
जिसका जन्म हो रहा है उसमें वो नहीं है,
शरीर का जन्म हो रहा है, किन्तु शरीर में प्रभु नहीं है,
शरीर और आत्मा का मिलन है, मिलावट नहीं,
स्पर्श है, तादात्म्य नहीं,
'दो' जब एक-रूप में प्रतीत होते हैं तब वो मिलावट है,
तब वो तादात्म्य है।
पर दो जब दो-रूप में ही प्रतीत होते हैं तब वो मिलावट है
तब वो तादात्म्य है,
पर दो जब दो-रूप में ही प्रतीत होते हैं तब वो सिर्फ
मिलन ही है, स्पर्श है...
'दो' का एक न होना, मतलब एक का एक होना।'

प्रभु 'दो' से परे हैं,
प्रभु का शरीर दो से (माता-पिता से) एक हुआ,
लेकिन प्रभु शरीर से एक नहीं हुए,
क्योंकि स्वतंत्र रूप से एक होने की ज्वलंत अनुभूति
प्रभु की प्रकट थी,
अपने एकत्व को संजोये हुए आत्मा का देह के साथ आविर्भूत होना,
वही है जन्म कल्याणक...

Everything is Online, We are Offline 6.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी ने अभी-अभी बड़ी घोषणा कर डाली, 'शीघ्र ही देश के सारे टोल-बूथ हटा दिए जाएंगे। भविष्य में टोल-बूथ का स्थान जीपीएस लेगा। आपकी यात्रा के किलोमीटर के अनुपात में टोल स्वत: ही कटता जाएगा।'

इस घोषणा के खिलाफ राजस्थान पत्रिका के प्रधान संपादक श्री गुलाब कोठारी ने बहुत ही भड़ास निकाली है।

उनके ही शब्दों में पढ़ते हैं –

'सरकार ने पहले ही टोल बूथों पर फास्ट टैग अनिवार्य किया हुआ है। इसे कौन देखेगा कि फास्ट टैग का अन्य उपयोग नहीं हो रहा। पिछले दिनों हमारे एक साथी एन.सी.आर. के एक मॉल में गए तो पार्किंग का शुल्क सीधे फास्ट टैग से ही कट गया।

आने वाले दिनों में यह भी हो सकता है, कि मेरा वाहन माह में 200 km चलेगा तो उतना, और 2000 km चलेगा तो उसके अनुसार टोल कटेगा। मेरे प्रतिदिन कार्यालय, दूध, सब्जी, बच्चों को स्कूल लाना-ले जाना जैसे इतने कार्य हैं कि इनका योग ही 2000-3000 km हो जाएगा। इस दूरी का टोल जीपीएस स्वत: काट लेगा? जीपीएस में यह सिस्टम तो होता नहीं कि टोल रोड पर ही ऑन-ऑफ होगा, तो क्या मुझे बाहर नहीं भी जाना हो, तो भी मेरा टोल कटता रहेगा?

फिर फास्टटैग और जीपीएस जैसे माध्यम से लोगों के निजी जीवन में ताक-झांक होगी सो अलग।

दुनिया में डाटा के दुरुपयोग के कईं ऐसे उदाहरण हैं। सवाल यह है कि लोगों के वाहनों पर लगने वाली चिप क्या सिर्फ टोल नाके पर शुल्क देने भर के लिए काम में लाई जाएगी? क्या इस तकनीक के खतरे नहीं है? क्या इसमें नागरिकों की निजता से जुड़े किसी तरह के संकट के आसार हैं? उस समय एक वाहन धारक का क्या होगा – इसका उत्तर भी गड़करीजी को ही स्पष्ट करना चाहिए।'

यहाँ पर कोठारी जी की बात समाप्त करके मेरी

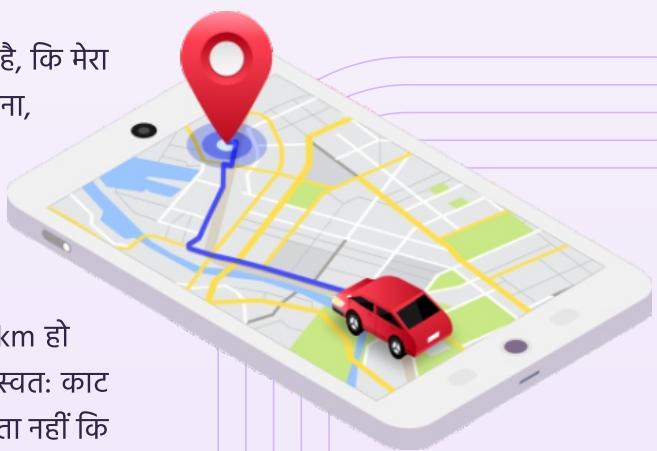

बात बतानी शुरु करूंगा।

हकीकत में मैंने पूर्व के लेख में जिस चिप के बारे में बताया था, उसके दुष्परिणाम लोगों को धीरे-धीरे जैसे-जैसे समझ में आते जाएंगे वैसे-वैसे हल्ला मचना शुरु हो जायेगा।

बात हमेशा राष्ट्रीय सुरक्षा इत्यादि आदर्शवाद से ही प्रस्तुत की जाती है, मगर वास्तविकता उससे ठीक विपरीत ही दिखाई देती है।

आज के परिप्रेक्ष्य में भी मोदीजी की किसी नीति के खिलाफ जनता को बताने जाओ तो जनता खुद ही डरे-सहमे हुए अंदाज में कहती है कि, डर नहीं लगता आपको?

भविष्य में जब यहाँ लिखी बातें सच हो जायेगी तब बोलने का भी अवकाश कहाँ मिलेगा...

जो चिप गाड़ी में लगेगी, वैसी ही चिप अब डिपार्टमेन्टल स्टोर्स में, वस्त्रों में, अन्य सामग्रियों में लगनी शुरु हो चुकी है, और भविष्य में आपके शरीर में भी लगना पूर्णत: संभव है। गाय-बैल इत्यादि मवेशी को तो आज भी लग ही रही है।

अपनी चीजें चोरी ना हो जाये, इसलिए लगानी हो, तब तक तो ठीक है, मगर मेरा गुलाम कहीं इधर-उधर ना जाये ऐसी सोच कितनी भयानक है।

माइक्रोचिप का सबसे बड़ा नुकसान आपकी निजता पर हमला है। माइक्रोचिप से जो भी ट्रान्सेक्शन होगा वह सारा डिजीटल होगा।

भारतदेश के लिए कैशलेस इकोनॉमी आज भी बहुत मुश्किल है क्योंकि यहां 70 प्रतिशत से अधिक प्रजा गांवों में रहती है और उसे स्मार्टफोन हैंडल करना भी नहीं जमता है।

मगर... भारत देश को केशलेस करने के लिए ऊपर बैठे हुए आकाओं ने क्या-क्या नहीं किया?

(1) सबसे पहले सबके आधार कार्ड बना-वाये गये।

(2) तत्पश्चात् जन-धन योजना से गरीबों के भी अकाउन्ट खोले गये जीरो बैलेंस पर।

(3) फिर आधार के साथ बेंक अकाउन्ट लिंक करने के लिए बोला गया।

(4) बाद में डीमोनेटाइजेशन (नोटबंदी) करके 500/1000 रुपये बेंक में जमा करने को बोला गया। (आपके हाथ में रहा हुआ आपका रूपया दूसरों के हाथ में देने के लिए मजबूर किया गया, वह भी उसी के हाथ में, जिसके हाथ में देना उन्होंने तय किया हुआ था।)

(5) फिर पेटीएम में डालकर उपयोग में लेने को बोला गया (हालांकि अनिवार्य नहीं किया गया, मगर आदत डालने की कोशिश की गई।)

(6) गरीब-अमीर सबको डिजिटल इन्डिया के साथ जुड़ने के लिए आह्वान किया गया। फिर भी हम पर कोई फर्क नहीं पड़ा। आज भी केश करन्सी से ही हमारा व्य-वहार हो रहा था। फिर

(7) कोरोना लाया गया। अब 10 साल में पूरे विश्व की व्यवस्था परिवर्तन का लक्ष्य पूरा करने के लिए वे लोग दौड़ रहे हैं।

जब तक केश खत्म नहीं होती है, तब तक माइक्रोचिप का विचार भी असंभव है।

मगर, उसका एक रास्ता है उन लोगों के पास! जिसका नाम है आधार कार्ड। यदि महंगाई बढ़ती है या राष्ट्र के कुछ नागरिक लॉकडाउन इत्यादि दमनकारी नीतियों का विरोध करने रास्ते पर उतर जाये, तो आधार कार्ड को डीएक्टिवेट कर सकते हैं। बेंक अकाउन्ट इत्यादि के साथ जुड़ा हुआ आधार कार्ड ही यदि इनवेलिड कर दें, तो राशन कार्ड से खाने पीने का सामान भी खरीद नहीं सकते क्योंकि आधार राशन कार्ड से भी लिंक्ड है।

कईं साल पूर्व आपको कोई भी चीज खरीदनी होती थी, तो जेब में कुछ न कुछ रूपये ले जाने पड़ते थे। बाद में इसकी आवश्यकता नहीं रहीं, क्योंकि क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, एटीएम आ गये और तत्पश्चात् उन कार्ड की भी जरूरत नहीं रही, मोबाइल से ही पेमेन्ट होने लगा। मोबाइल की भी भविष्य में जरूरत नहीं पड़ेगी, ऐसा कहकर आप के शरीर में चिप लगाई जायेगी। मोबाइल भी कोई चोरी कर सकता है, माइक्रोचिप कौन चोरी करेगा? ऐसा कहने वालों को पूछो, माइक्रोचिप के जरिये जिस अकाउन्ट में से हम पैसे निकाल रहे है, उसी अकाउन्ट को हैक कर के कोई हमें पूरा गंजा कर दे तो जिम्मेदारी किसकी? या सरकार के कोई अधिकारी हमें किसी कानून में फँसाकर हमारे पैसे निकाल ले, तो सुरक्षा कौन देगा?

जिस प्रकार डिजिटल दादागिरी बढ़ती जा रही है, उसे देखते हुए एक चुटकुला याद आ गया।

बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा, 'मेरे सर पर कितने बाल हैं?' बीरबल ने कहा, 'जहाँपनाह एक लाख बाल हैं।'

सेनापति ने तुरंत पूछ लिया, 'मेरे सर पर कितने हैं?'

बीरबल बोला, '80,000 हैं, सेनापति जी!'

सेनापति भड़क गया, '20,000 कम क्यों? मेरे सर पर भी एक लाख होने चाहिए।'

बीरबल ने कहा, 'आप ही गिन लो।'

सेनापति ने कहा, 'आप गिनकर दो, क्योंकि आपने ही कहा है।'

बीरबल ने कहा, 'ठीक है, मैंने कहा है तो मैं ही गिन कर देता हूँ। नाई को बोलता हूँ, गंजा कर देगा, फिर मैं गिन लूंगा।'

सेनापति ने शरणागति स्वीकार ली, 'ना... ना... रहने दो बीरबलजी! जो है बराबर है, मुझे इतने बालों से संतुष्टि है।'

डिजिटल करन्सी – RFID चिप इत्यादि आने के बाद आपके खाते में से पैसे कम भी हो जायेंगे तो भी आप कुछ भी बोल नहीं पायेंगे, क्योंकि सेनापति जी की तरह ज्यादा बोलने जायेंगे तो गंजा होने की बारी आयेगी। उस समय मौन होने से अच्छा है, अभी से मुखर होना शुरु करो।

Heart Jinshasan

संघ मेरा स्वामी

"प्रियम्"

श्रावक /

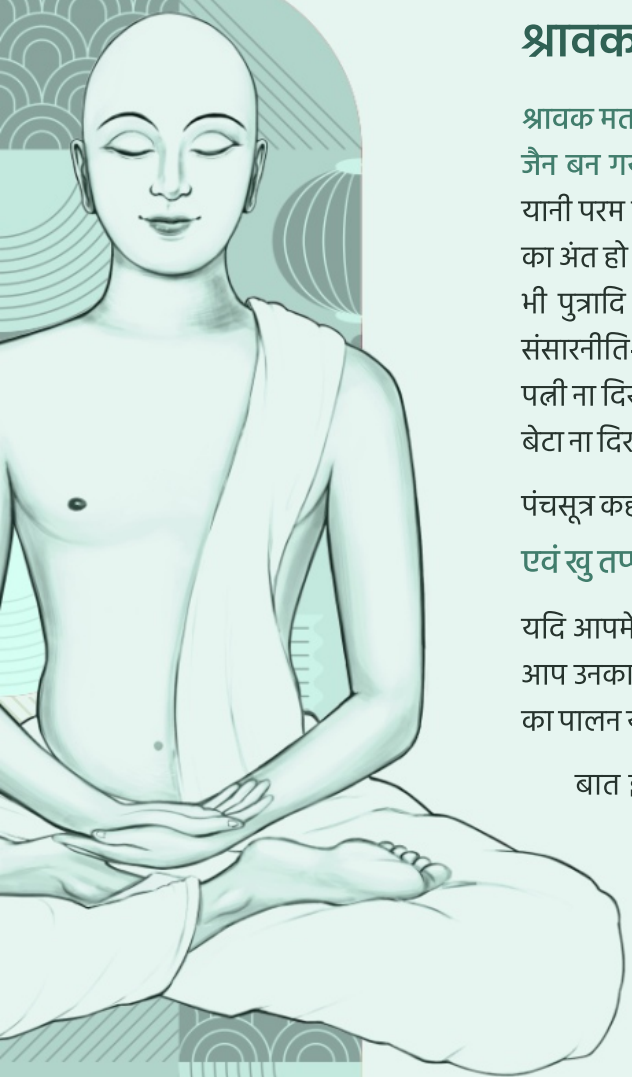

श्रावक मतलब क्याँ? जिसके लिए 'जैन' बेटा बन गया और बेटा जैन बन गया हो उसका नाम श्रावक। 'जैन' मात्र बेटा बन जाये यानी परम स्वजन बन जाये। सारे वाद-विवाद-फसाद-अहं आदि का अंत हो जाए। बेटा जैन बन जाए तो पुत्र भी परिवार का पोषण भी पुत्रादि के रूप में नहीं पर साधार्मिक के रूप में हो जाये। संसारनीति-मोह-आसक्ति-यह सभी का अंत हो जाये। पत्नी में पत्नी ना दिखे, साधर्मिक दिखे। मां-बाप में साधर्मिक दिखे, बेटे में बेटा ना दिखे, साधार्मिक दिखे।

पंचसूत्र कहता है :

एवं खु तप्पालणे वि धम्मो, जह अन्नपालणे त्ति।

यदि आपमें इतनी दृष्टि आ जाये और परिवार को धर्म में जौड़कर आप उनका साधर्मिक के रुप में पालन करो तो जिस तरह दूसरों का पालन यह धर्म है। उस तरह उनका पालन करो, यह भी धर्म है।

बात इतनी ही है - 'जैन' बेटा बन जाये और बेटा 'जैन' बन जाये। एक Basic श्रावक बनने के लिए इससे ज्यादा कुछ भी जरूरी नहीं होता है।

वस्तुपाल के पास यह परिणति थी। स्वामि-त्वाभिमान शून्य था, इसलिए ही 'संघपति' पद उन्हें परेशान कर रहाँ था। पूरा वातावरण गंभीर हो गया था। एक तरफ यह पद के लिए वोही लायक है, ऐसा सभी को लगता था, और दूसरी तरफ वस्तुपाल की व्यथा देखी नहीं जा रही थी। वस्तुपाल की अश्रुधारा रुक नहीं रही थी।

एवं खु तप्पालणे वि धम्मो, जह अन्नपालणे त्ति।

मैं आपको पूछता हूँ - संघ संवेदना से हम कब भावित हुए? 'मेरे भगवान का संघ' ऐसी ममता हमें कब जगी? हम कोहिनूर हीरे के साथ कंकर जैसा बर्ताव कर रहे हैं, ऐसा नहीं लगता है? हम भावना शून्य-जड़ हो गए हैं, ऐसा नहीं लगता है? क्यों संघ का नाम पड़ते ही हमारे रोम-रोम पुलकित नहीं हो जाते हैं? क्यों हम इतने शुष्क और उदासीन है?

वस्तुपालचरित्त में स्पष्ट कहाँ है,
जिनेन्द्रान्न परो देवः सुसाधोर्न परो गुरुः।
न सङ्घादपरं क्षेत्रं, पुण्यमस्ति जगत्त्रये।।

तीनोलोक में जिनेन्द्र से बड़े कोई देव नहीं है। सुसाधु से बड़े कोई गुरु नहीं है, और संघ से ज्यादा पवित्र कोई भी क्षेत्र नहीं है।

दुनिया की श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कंपनी हो, जिसमें किया गया investment अवश्य दस गुना होकर रिर्टन मिलता हो। उससे भी ज्यादा श्रेष्ठ कंपनी हमें संघ लगे तो हम सच्चे जैन हैं। विश्व के टॉप 10 श्रीमंतो से भी हमें हमारे संघ के Bottom Ten जैन more VIP लगे, विश्व के सभी देशों के P.M. से भी हमारा एक फटेहाल श्रावक ज्यादा आदरणीय लगे, हमारे दामाद से भी एक साधर्मिक ज्यादा मूल्यवान मेहमान लगे तो हम सच्चे जैन है।

वस्तुपाल मंत्री थे। महामंत्री थे। बहुत युद्ध जीते थे, करोड़ों सोनामोहरों के मालिक थे, इसलिए उनका चरित्र नहीं लिखा गया। वह सच्चे जैन थे, इसलिए उनका चरित्र लिखा गया है। 'संघपति' पद में उन्हें संघ की आशातना नजर आती थी। स्वामित्वाभिमान को उन्होंने किस हद तक कुचल डाला होगा, उसकी कल्पना कीजिये।

संघ के लिए सब कुछ कर गुजरना, संघ के लिए प्राणों की आहूति देने तक सज्ज रहना, संघ के लिए लाखों और करोड़ों सोनामहोरे पानी की तरह बहाना, और ऊपर से जैसे कुछ किया ही ना हो, और संघ ही मेरा परम उपकारी है, ऐसा आचरण करना, क्याँ यह आसान बात है?

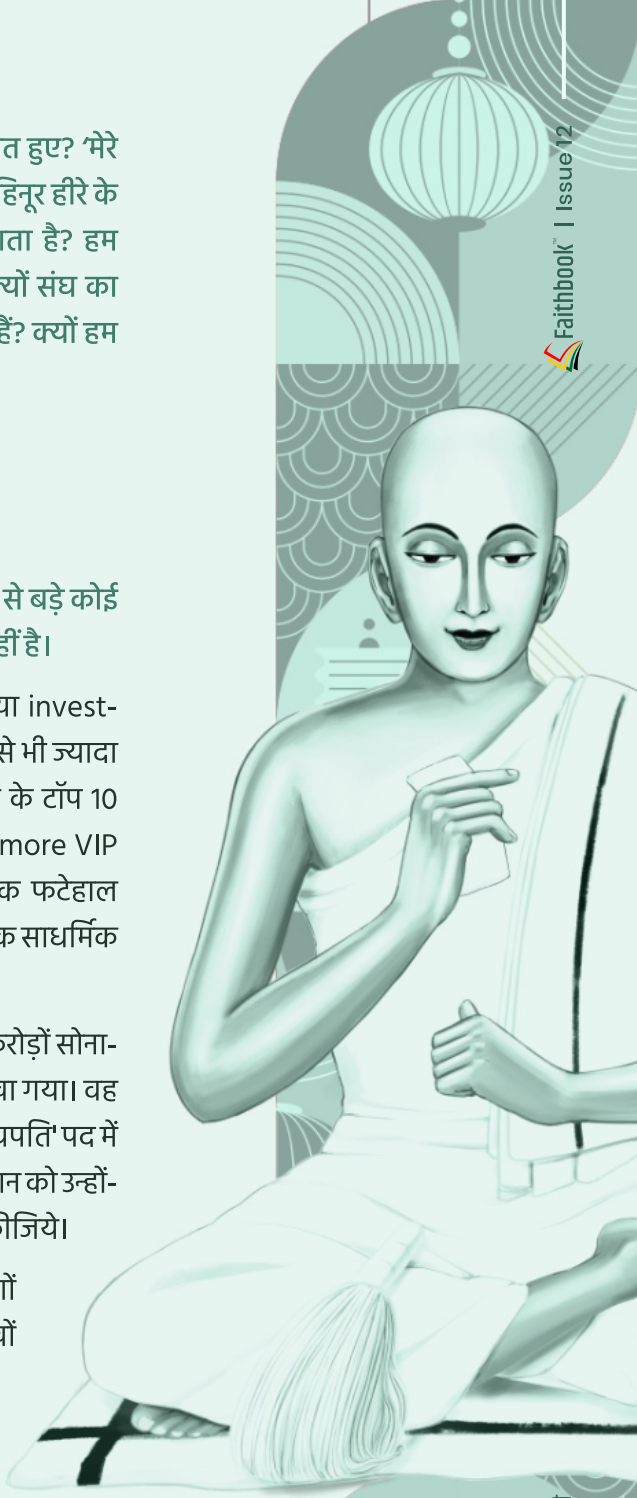

जिनेन्द्रान्न परो देवः सुसाधोर्न परो गुरुः।
न सङ्घादपरं क्षेत्रं, पुण्यमस्ति जगत्त्रये।।

अहम् /

प्राप्त हुए संघ को आपकी आत्मा के लिए सफल बनाना हो तो आपके स्वामित्वभिमान को चूर चूर कर दो। गौतमस्वामी जैसे अंदर-बाहर से भरे हुए थे, पर तो भी कितने विनीत और नम्र थे। हमारे पास तो उनके जैसा बाह्य-ऐश्वर्य भी नहीं है और आंतरिक गुण भी नहीं है। तो भी हम अहम नहीं छोड़ सकते हैं, क्याँ यह, 'जेब खाली और दमाम भारी' जैसी दशा नहीं है?

अहम् - यह आत्मा के ऊपर का अणुबोम्ब है।

अहम् - यह परलोक के लिए परमाणुबोम्ब है।

अहम् - यह आराधना के ऊपर AK47 का प्रहार है।

अहम् - यह सद्गति का सत्यानाश है।

अहम् - यह मोक्ष की मौत है।

याद आती है अष्टावक् गीता-

यदा नाऽहं तदा मोक्षो, यदाऽहं बंधनं तदा।

जब अहम् नहीं है, तब मोक्ष है।
जब अहम् है, तब बंधन है।

अहम् के विसर्जन में हमें अपना विसर्जन हुआ लगता है। पर हकीकत अलग है, अहम् अलग है और हमारी जात अलग है। अहम् हम नहीं है, अहम् हमारा मित्र भी नहीं है, अहम् हमारा दुश्मन है। अहं पुष्ट होता है, तब हम कृश होते है। अहं बढ़ता है, तब हम घटते हैं। अहं की आंगी होती है, तब हमें खरोचे आती है। अहं गद्दीनशीन होता है, तब हम पदभ्रष्ट होते हैं। अहं की प्रतिष्ठा होती है, तब हमारा उत्थापन होता है। अहं की अंजनशलाका होती है, तब हमारी आँखें फूट जाती है। अहं Enter होता है, तब हमारी Exit हो जाती, है। अहं को उसकी खुराक मिलती है, तब हम भूखमरा सहन करते है। अहं गटागट करता है, तब हम प्यासे मरते है। अहं को गुदगुदी होती है, तब हमारी जान पर बन आती है। अहं कमाई कर लेता है, तब हम लूट जाते है। अहं का Growth होता है, तब हमारा Downfall हो जाता है। अहं Healthy हो जाता है, तब हमें कोरोना हो जाता है।

अहं रे अहं तू, जो जाये मरी,
फिर मेरे में बाकी रहे हरि।

मार दो अहं को, पटक दो अहं को, उखाड़ दो अहं को, फेंक दो अहं को।

यह अहं ही है, जो हर तरह से सता रहा है। यह अहं ही है जो शासन के स्वर्णिम स्वप्नों को साकार होने से रोक रहा है। यह अहं ही है, जो बाहर लड़ने की Emergency है, तब अंदर में लड़ा रहा है। यह अहं ही है, जो लव जेहादियों को खुला मैदान दे रहाँ है। यह अहं ही है, जो जोखिम में पड़े हुए तीर्थों के लिए फुरसत नहीं दे रहा है। यह अहं ही है, जिससे संघ में फाटफूट पड़ती है। यह अहम् ही है जिससे संस्थाएँ टूट जाती है।

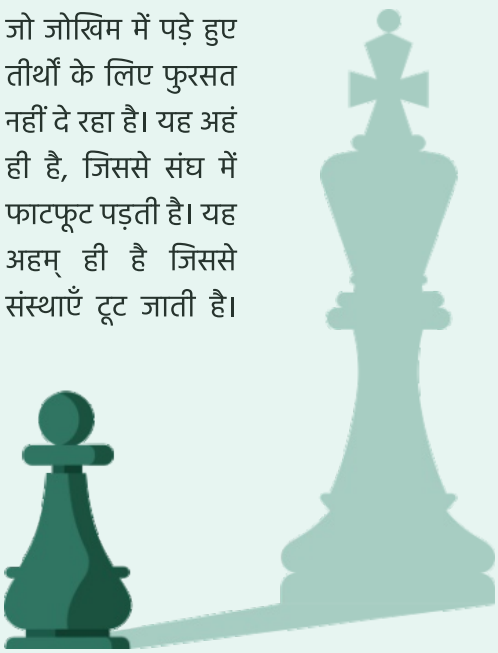

अहं रे अहं तू, जो जाये मरी,
फिर मेरे में बाकी रहे हरि।

यह अहं ही है, जिससे हमारे ही फूट जाते है। यह अहं ही है, जो संघ का नूर लूट जाता है। यह अहं ही हैं जो रचना-त्मक कार्यो को तोड़-मरोड़ देता है।

जिनशासन का शत्रु भी यही है-अहम्, संघ का शत्रु भी यही है-अहम्, आत्मा का शत्रु भी यही है-अहम्।

वैसे देखा जाये तो हमें अनंत बार शासन मिला है। पर हम शासन को ना मिल सके। शासन हमें मिले, यह संयोग की बात होती है, हम शासन को मिले, यह साधना की बात होती है। संयोग कर्माधीन होता है, साधना आत्माधीन होती है। आप के घर पर कोई आ जाये, यह आपके आधीन बात नहीं है, पर आपको उसे मिलना है या नहीं, यह आपके अधीन है। आप आपकी रुम का दरवाजा खोलेंगे ही नहीं, आप रुम के बाहर ही ना आओ, तो आप उनको नहीं मिलोगे। शासन तो हमारे घर अनंत बार आया। पर अहं उसे नहीं मिले। हम हमारे अहं की रुम में घुसे रहे, उसे तो हम कैसे छोड़ सकते है?

हमारे घर महावीरस्वामी आये, हमारे घर गौतम-स्वामी आये, हमारे घर सुधर्मास्वामी आये, हमारे घर केवलज्ञानी आये, हमारे घर चौदहपूर्वी आये, हमारे घर पैंतालीस आगम के जीवंत ज्ञानभंडार परम संयमी गुरुभगवंत पधारे... हमारी राह देख देखकर वापस सिधारे, हम हमारे अहं के कमरे से बाहर ना निकल सके।

अहं तीर्थंकर... अहं गणधर...
अहं पूर्वधर... अहं आगमधर...

बिलकुल गलत थियरी पर पूरे गलत Practicals करके हम अनंत पुण्य से मिले हुए अवसर को हार गये और इस भव में भी शायद यही भूल का पुन-रावर्तन हो रहा है।

हमें डर लगता है। यदि मैं अहं के कमरे से निकल गया तो मेरा क्याँ होगा? हम यह नहीं समझ सकते कि कल्याण के सिवा और कुछ भी नहीं होनेवाला है।

वस्तुपाल अहं के कमरे से निकल गये थे। 'संघ-पति' बिरुद लेते हुए उनका अंतर कचौट रहाँ था। उस समय पर गुरु भगवंत कहते हैं - "वस्तुपाल! आप संघपति शब्द के अर्थ को समझे ही नहीं है। इसलिए ऐसी परेशानी हुई है। संघ का पति = संघपति इस तरह तत्पुरुष समास करने से - संघपति यानी संघ का स्वामी, संघ का मालिक ऐसा मतलब समझ में आता है। पर यहाँ बहुव्रीहि समास करना है, संघ है पति जिसका वह = संघपति यानी की आप संघ के मालिक नहीं, संघ आपका मालिक।" यह सुनकर वस्तुपाल को आनंद हो गया।

Young mind for better change

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

"Power of Unity" की लेखमाला में हमने इसके पहले के लेखों में 'UNITY' के 'UNIT' तक के portion को समझ लिया था, जो इस प्रकार था:

U = Understanding

N = No Negatives

I = Involvement

T = Transparency

और आज हम बात करेंगे 'UNITY' के अन्तिम लैटर 'Y' की...

Y = Young Mind, अर्थात् युवा मन...

पूरे विश्व में अनेक प्रकार के धर्म हैं। उनमें प्रभु वीर का शासन लोकोत्तर है, क्योंकि इस जिनशासन की व्यवस्था अत्यन्त निराली है।

प्रभु ने स्वयं अपने मुख से कहा है कि, "मेरे शासन के लिए जो नियम बनाए गए हैं, उन नियमों में यदि कभी भी परिवर्तन करना चाहें, तो सुविहित गीतार्थ आचार्य एकत्रित होकर कर सकते हैं।"

वैसे ऊपरी ढंग से साधारण लगने वाली यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

स्वयं प्रभु ने भी नियमों की जड़ता को स्वीकार नहीं किया है। सिद्धान्तों के मूर्खतापूर्ण हठाग्रह के साथ जकड़े रहना प्रभु को इष्ट नहीं है। सत्य का तात्पर्य समझे बिना कदाग्रह करना प्रभु को पसन्द नहीं है।

प्रभु अत्यन्त उदार हैं, Down to Earth हैं, वास्तविकता की धरती पर रहकर बोलने वाले हैं।

और हम उनके सामने बिल्कुल ही उलटी और विपरीत विचारधारा से जकड़े रहने वाले लोग हैं।

वर्षों से चलती आ रही परम्परा को जरा भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

जो वर्षों से करते आ रहे हैं, वही करते रहेंगे, इसी जिद के साथ जीने वाले हैं।

सबसे हास्यास्पद बात तो यह है कि, धार्मिक या संस्थाकीय नियमों में जड़तापूर्वक हठ रखने वाले संसार के नियमों में सभी प्रकार की छूट-छाट को

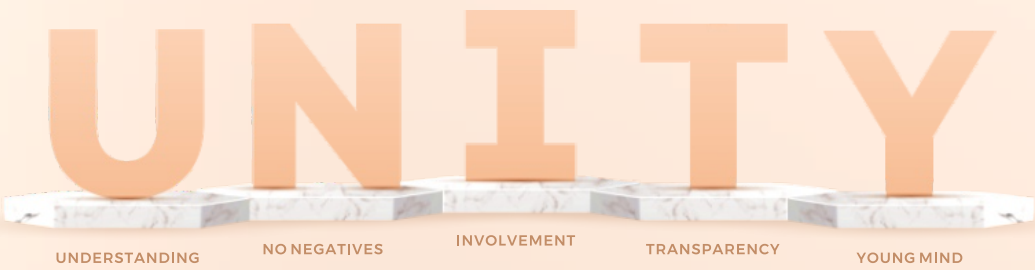

और शिथिलता को हँसते हुए हर्षोल्लास के साथ स्वीकार करते हैं और ऊपर से यह भी कहते हैं कि, "आज-कल ये सब कुछ करना पड़ता है, बच्चे मानते ही नहीं है, इसलिए करना पड़ता है। अगर इतना भी जाने नहीं देंगे तो फिर कैसे चलेगा?"

तो फिर धर्म, संघ, संस्था में क्यों पुराने नियमों के लिए इतना हठाग्रह, जिद पकड़े रहते हैं?

वही पुरानी, घिसी-पिटी स्टाईल से ही संचालन, व्यवस्था हो रही है?

Why? और उनके सामने आपने ...

- वेशभूषा-पोशाक में परिवर्तन स्वीकार किया, क्या आप धोती, टोपी, फेंटा पहनते हैं?
- लग्नादि प्रसंगों में परिवर्तन को स्वीकार किया, अब संगीत संध्या, रास-डांडिया वग़ैरह कितने होते हैं?
- बर्थ-डे सेलिब्रेशन में परिवर्तन को स्वीकार किया, अब लापसी, सीरा इत्यादि मिष्टान्न कितने घरों में बनते हैं?
- घर के एलीवेशन-फर्नीचर में परिवर्तन को स्वीकार किया, पुराने जमाने में बनने वाले दरवाजे कहीं देखने के लिए मिलते हैं?
- खाने-पीने में परिवर्तन को स्वीकार किया, आपको देसी आईटम्स् से तो पिज़्ज़ा, पास्ता और पाव-भाजी अधिक अच्छी लगती है ना?

आपने जहाँ-जहाँ, जिन-जिन बातों में परिवर्तन स्वीकार किया है, वे योग्य हैं या अयोग्य इसकी चर्चा अभी नहीं करनी है किन्तु...

आप इतने तो ब्रॉड और बोल्ड माईन्ड के हैं कि इस परिवर्तन को स्वीकार करने की आपकी तैयारी है।

तो फिर बाह्य जगत में आपका स्टैंड अलग और धर्म जगत में उससे बिल्कुल अलग, ऐसा क्यों?

तो यहाँ भी परिवर्तन को अपनाओ!

शासन एवं शास्त्र सापेक्ष रहकर जिस प्रकार अधिक से अधिक जिनशासन को लाभ हो, इस प्रकार के परिवर्तन को अवश्य स्वीकार करना चाहिए।

- स्वामी-वात्सल्य के मेनु में देसी मिठाई के साथ युवाओं को अच्छी लगें ऐसी वस्तुओं को रख-कर उन्हें धर्म-स्थानों की ओर आकर्षित करना चाहिए।
- ब्लैक-बोर्ड की घोषणा के साथ-साथ Social Media का उपयोग करके युवाओं तक संघ के कार्यक्रम, अनुष्ठान, प्रवचनों की जानकारी पहुँचानी चाहिए।
- शास्त्रीय राग में गाये जाने वाले प्राचीन स्तवनों के साथ-साथ नये भक्तिपदों को गाने वाले युवा संगीतकारों को आमन्त्रित करके उनके द्वारा भी प्रभु-भक्ति का अनोखा माहौल तैयार करना चाहिए।

- हाथ से लिखे हुए पुस्तक, बही और चोपड़ों के साथ-साथ कम्प्युटराईज़्ड् सिस्टम में व्यवहारों का हिसाब रखना अब समय की माँग है तो उसे भी सीखना चाहिए।
- कार्यक्रमों के आयोजनों में प्राचीनता को संभालते हुए युवाओं को आकर्षित करें ऐसे मैनेजमेन्ट भी होने चाहिए।

बस... देखा ना! इतनी बातों से ही कितनों के नाक चढ़ गए हैं!

कितनों को लगता होगा कि, क्या यहाँ पर शासन की नीलामी चल रही है? शास्त्रीय पद्धति के नाश के लिए यह षड्यन्त्र रच रहे हैं? क्या प्राचीनता के ऊपर आक्रमण करने का यह प्रयास नहीं है?

तो, हे प्राचीनता के पूजारी! गहरी साँस लो, थोड़ा ठहर जाओ!

यदि आप सच में इतिहास जानते हो तो जरा इतिहास के पन्ने पलटकर देखो कि, समय की आवश्यकता अनुसार संघ, समाज ने परिवर्तन को स्वीकार किया है या नहीं?

हर बार नये परिवर्तनों में दोष खोजकर उनकी Negativity फैलाते रहना, यह संकुचित विचार -धारा वाले व्यक्तियों की निशानी है।

प्राचीनता हो या आधुनिकता, यदि दोष खोजने के लिए जाएंगे तो दोष दोनों में ही दिखेंगे।

Nokia कंपनी जो एक समय भारत में Mobile की नंबर 1 कंपनी थी, लेकिन समय की माँग के अनुसार उसने परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया, अब सभी जानते हैं कि उसकी क्या हालत है?

उसी प्रकार जिनशासन ने भी परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया होता तो कदाचित इतनी रौनक, उत्कर्ष और वृद्धि देखने के लिए नहीं मिलती।

- पू. देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के द्वारा आगमों को पुस्तकारुढ़ किया गया, क्या उन्होंने यह गलत किया?
- पू. आर्यरक्षितसूरि म. सा. के द्वारा जैनकुलों की व्यवस्था की गई, क्या यह उन्होंने अयोग्य किया?
- पू. आ. बप्पभट्टीसूरि म. सा. के द्वारा दिगम्बर-श्वेताम्बर मूर्ति के भेद को समझाने के लिए कंदोरा-धोती की प्रणालिका का प्रारम्भ किया गया, क्या उन्होंने यह सही नहीं किया?

आगमों के पुस्तकारुढ़ होने से हमारी सैद्धान्तिक धरोहर आगम शास्त्र हमें मिले। उन्हें पुस्तकारुढ़ करने के लिए प्रयत्न नहीं किया होता तो वे हमें प्राप्त होते? (ठीक इसी प्रकार सभी बातों के लिए समझना चाहिए।)

हे परममित्र!

प्रत्येक परिवर्तन से नुकसान ही होगा, ऐसी ग्रन्थि से क्यों जकड़ चुके हो?

समय परिवर्तनशील है। समय के अनुसार सतत परिवर्तनशील रहना, नये-नये बदलावों को स्वीकार करते रहना ही समय के साथ चलना है।

हमारे व्यक्तिगत पाँच वर्ष पहले के और वर्तमान के विचारों भी ज़मीन-आसमान जितना अन्तर आ गया है। पहले जो Wrong लगता था, आज वह Right लगता है।

सालों पहले जब बहने पंजाबी ड्रेस पहनकर धर्म-स्थलों पर जाती थी, तो इस प्रकार की टिप्पणी की जाती थी कि, "देखो... देखो...!! आज-कल की बहने साड़ी जैसे पारम्पारिक परिधानों को छोड़कर पंजाबन बनकर, ड्रैस -पहनकर देहरासर-उपाश्रय आती हैं।"

और अब परिवर्तन हमारे विचारों को यहाँ तक लेकर आया है कि, जीन्स, शोर्ट्स के बदले साडी-ड्रेस पहनकर देहरासर-उपाश्रय जाए तो वह उचित वेश है।

एक बात हमेशा ध्यान में रखें!

पहले जो परिवर्तन आते थे, वो वर्षों-वर्षों के पश्चात् आते थे किन्तु अब तो रोज सुबह होती ही आपके सामने नये परिवर्तन बांहें फैलाकर खड़े होते हैं।

तो क्या आप रोज परिवर्तनों को कोसते रहेंगे? विरोध करते रहेंगे? दोष-Negativities ढूँढ़ते रहेंगे?

संघ, संस्था या समाज को उत्साह के साथ जोड़-कर रखने के लिए परिवर्तन करते रहना चाहिए।

उम्र से भले ही वृद्ध हो जाओ, किन्तु दिलो-दिमाग से सदैव युवा ही रहना चाहिए।

युवा मन Creative होता है, वह ऐसे कोई ना कोई Ideas खोज निकालता है, जिससे संघ-शासन को लाभ होता है।

पूज्यपाद सिद्धान्त महोदधि आचार्य श्री प्रेम-सूरीश्वरजी महाराजा का श्रमणों की फौज तैयार करने का सपना साकार करने के लिए पूज्यपाद वर्धमान तपोनिधि गुरुदेव आचार्य श्री भुवनभानु-सूरीश्वरजी महाराजा ने Young Mind का उपयोग किया, "शिविर" की मस्त एवं चुस्त Idea को खोज निकाला।

रग-रग में बसे हुए शासन राग के कारण से शिविर का यह Idea गुरुदेव के लिए इतना Success-ful रहा कि आज इसके मीठे फल का स्वाद पूरा संघ आनन्द से चख रहा है।

इस लेख के साथ संघ-शासन की एकता के लिए प्रारम्भ की हुई लेखमाला "Power of Unity" का यहाँ समापन होता है।

इस लेखमाला का आशय-तात्पर्य समझकर सभी लोग संघ भावना, संघ प्रेम, संघ समर्पण और संघ सेवा में सदा समुद्यत रहें, तत्पर रहें, क्रियाशील बनें!

शासनप्रेमी बनकर शासन का विश्व में अभ्युदय करें!

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो तो,
त्रिविध, त्रिविध मिच्छा मि दुक्कडं!

Last Seen

दूध में से दही = सफेद
दूध में से छाछ = सफेद
दूध में से मक्खन = सफेद
दूध में से पनीर = सफेद
दूध में से घी = सफेद

दूध परिवर्तन
का स्वीकार करता है,
वह भी अपने वास्तविक
रंग को रखते हुए...!
है ना कमाल...!

ब्रह्मचर्य का पूर्ण सत्य

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Hello Friends,

आज हमें बड़े ही पेचीदे मामले पर वार्तालाप करने जा रहे हैं।

भगवान बनने की यात्रा पर निकले हैं हम, और हमारा अगला, यानी बारहवां पड़ाव है ब्रह्मचर्य।

शब्दों का उच्चारण तो भारी है ही, साथ ही इसके आचरण में अच्छे-अच्छों के पानी उतर जाते हैं।

आज समाज स्वतंत्र है, सेक्स या जातीय चेष्टा एवं जातीय जीवन के बारे में बड़े खुलेपन से लिखा जाता है, बोला जाता है, और तो और मन चाहे वैसे जिया भी जाता है।

वासना की तृप्ति को सुख का एवं जीवन का आनंददायक अविभाज्य अंग माना जाता है। विजातीय के प्रति आकर्षण से लेकर संभोग तक के सभी मुद्दों के बारे में सभी प्रकार के प्रसार माध्यमों में ढेर सारी जानकारी उपलब्ध है।

लोग यूँ कहते हैं कि अच्छे इन्सान बनो, फिर तुम्हारा व्यक्तिगत जीवन (प्राइवेट लाइफ) कैसा है-कैसा नहीं, उससे क्या लेना देना? तुम्हारी पर्सनल लाइफ कैसे जीनी वह तुम्हारे ऊपर निर्भर है, पर समाज के लिए हमेशा उपयोगी बनते रहो। हमेशा औरों का सम्मान और सहा-यता करते रहो, बस यही तो अच्छे इन्सान की पहचान है।

ऐसा मानना आधा सत्य है। पूर्ण सत्य तो यही है कि, वास्तव में अच्छे इन्सान बनना हो, तो निजी जीवन में भी पूर्णत: सुधार की आवश्यकता है। पहले खुद की नजरों में अच्छे बनो, फिर समाज की नजरों में अच्छे बनना।

आदमी जब स्वच्छंद बनता है, तब भले ही वह ऐसा मानता है कि मैं तो बहुत बोल्ड बन गया, मैं चाहे ये करूँ, मैं चाहे वो करूँ, मेरी मरजी। परंतु वास्तव में वह अपनी खुद की ही नजरों में गिरता जाता है। किसी को पूछने की जरूरत नहीं होगी, उसकी खुद की अंतरात्मा ही उसे रोकती है, टोकती है, उसको भीतर से ही चुभन होती है, अंदर ही अंदर घुटन सी होती है। उसको स्वयं ही यह मालूम हो जाता है कि वह किसी गलत रास्ते पर चल रहा है।

युवा उम्र में विधवा हो चुकी अपनी ही पुत्रवधू को सुख देने के लिए उसके साथ अनैतिक संबंध रखे, (भौचक्के मत रह जाना, यह सत्य घटना है) और फिर ऐसा कहे, कि मैंने उसे सुख दिया, और मुझे भी सुख मिला; तो मानना चाहिए कि वह अपने पाप को ढकने के लिए वह असत्य तर्क का सहारा ले रहा है। उसे और किसी को पूछने की कुछ जरूरत ही कहाँ है, अपनी ही अंतरात्मा को पूछो, "मैंने सही किया या गलत?" उसकी अंत-रात्मा बोलेगी, "तू बहुत बड़ा पापी है।"

मित्रों! ब्रह्मचर्य का क्या मतलब है?

ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान, चर्य का अर्थ है आचरण। हमेशा ज्ञान में मग्न रहना ही ब्रह्मचर्य है। ना, किसी से भागने की जरूरत नहीं है। पर जो अशुचि है, काला मैल है, उससे ऊपर उठकर, जो श्वेत धवल है, उसमें मन को मग्न बना देना ही ब्रह्मचर्य है।

एक युवा लड़का अपने बूढ़े माँ-बाप की मन लगाकर सेवा-चाकरी करता है, यह उसका ब्रह्मचर्य ही है।

एक साधु भगवंत अपने बड़े उपकारी गुरु भगवन्तों की वेयावच्च करने में मग्न हो गये हैं, यह उनका ब्रह्मचर्य ही है। शक्तियों को गलत राह पर दौड़ने से थामे रखना, रोककर रखना मात्र ही ब्रह्मचर्य नहीं है, परन्तु शक्तियों को सही मार्ग पर ज्वार की भांति फैला देना, बिखेर देना सच्चा ब्रह्मचर्य कहा जाता है।

तो ए मेरे युवा दोस्तों! अय संसार का भविष्य!

आप अपनी शक्तियों को फिजूल चीजों के पीछे बहने मत दो, रोक लो उन्हें, जवानी के जोश को फालतू बह जाने मत दो, उसके कण-कण में से आत्म संतृप्ति को पा लो, ऐसा करो कि जीवन सफल बन जाए।

आप समझदार हैं। मैंने इस लेख में इशारे किए हैं। ब्रह्मचर्य क्या है वह आप जान गये होंगे। अब आप हैं, और आपकी अंतरात्मा है।

।। ब्रह्मचर्य पद।।

(तर्ज : मेरे नैना)

व्रत में व्रत शिरमोर कहा है,
ब्रह्मचर्य महान, व्रतधारी को प्रणाम...

देव भी जिनके पैरों की, रज माथे पर धरते;
साधुजन भी हाथ जोड़ के, जिन की स्तवना करते;
प्रकृति में जिनके संकल्पों के पड़े हैं निशान,
कर उनका सम्मान... 1।।

सागर बाहुबल से तैरा, वह भी कहा आसान;
और मेरूपर्वत पर चढ़ना, वह भी सरल सा काम;
इस व्रत का पालन दुष्करतम, ऐसा शास्त्र का ज्ञान,
गुरुओं का ये बयान... 2।।

सेठ विजय विजया सेठानी, श्री स्थूलिभद्र स्वामी;
कालखंड पर अमर रहेगी, व्रतधारी की कहानी;
व्रतपालन जो शुद्ध करे, वो तीर्थंकर पद मान,
आगम करे प्रमाण... 3।।

दिव्य प्रेम

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक गाँव में एक छोटा-सा बालक अपनी विधवा और गरीब माँ के साथ रहता था। एक बार निकट के गाँव में मेला लगा हुआ था। बालक की मेले में जाने की बहुत इच्छा थी। माता ने मजदूरी करके, और बचत की हुई रकम में से 2 रुपये बालक को दिये। बालक खुश होकर मेले में गया। शाम को घर वापस लौटा।

माता ने पूछा, 'बेटे! मेले से क्या खरीद कर लाया? मेले में क्या किया? झूले में बैठा?

नहीं?

गन से गुब्बारें फोड़े?

नहीं?

रगड़ा-पेटिस, पानी-पूरी खायी?

नहीं?

तो 2 रुपयों का क्या किया।

बालक बोला,
'मम्मी! तू आँख बंद कर, तो दिखाता हूँ।'

माता ने आँखें बंद की, हाथ खुले किये; बालक ने मम्मी के हाथ में लोहे का चिमटा रख दिया।

माता ने कहा, 'ये तूने क्या किया? झूले, गुब्बारे, पानी-पूरी या आइसक्रीम में पैसे क्यों खर्च नहीं किये?'

बालक ने कहा, 'मम्मी! मैं पिछले कई सालों से देख रहा हूँ। तू विधवा है, मजदूरी करके मुझे पढ़ा रही है। दूसरों के घरों में काम कर रही है। घर में तू मुझे रोटी बनाकर खिलाती है, तब गरम तवे को पकड़ने के लिए हमारे घर में एक पकड़ या चिमटा नहीं है; इसलिए तू कपड़े से तवा पकड़ती है और कभी-कभी तेरी उँगलियाँ जल जाती है। "जब तक मेरी मम्मी के हाथ में चिमटा ना आये तब तक मैं झूले में बैठने का सोच भी कैसे सकता हूँ?" बोलते -बोलते बेटा रो रहा था, और सुनते-सुनते माँ रो रही थी।

इसे कहते हैं "दिव्य प्रेम!" "निस्वार्थ प्रेम!"

प्रेम यानी...

- अपनी जरूरतों को न बताना और सामने वाले की जरूरतों को समझ लेना,
- सुखी होने की घटना नहीं, पर सुखी करने की मानसिकता,
- याचना की बात नहीं, पर भावना की बात हो,
- समर्पण हो, देखभाल हो, मरकर भी जतन हो,
- सामने वाले की कदर और संभाल हो,
- प्रेम दिखावे की चीज नहीं है, पर भीतर की अमीरी है।
- प्रेम करना कला है, प्रेम निभाना साधना है।
- प्रेम सहन करना सिखाता है, प्रेम संविभाग करना सिखाता है।

जैनशासन तो यहाँ तक कहता है,

"दुःखितेषु दया अत्यन्तं"

"धर्म रुपी राजमहल का प्रवेशद्वार ही जीवों के प्रति प्रेमभाव, मैत्रीभाव और दयाभाव है।

केवल 'स्व' और 'स्वजन' का ही विचार नहीं पर 'सर्वजीव' का विचार करें उसे ही जैनशासन में प्रवेश है।

मंदिर में भगवान के गर्भगृह तक पहुँचने के लिए, पहले रंगमंडप से गुजरना पड़ता है, वैसे ही जीव मैत्री रुप रंग-मंडप में से गुजरे बिना सही अर्थ में जिनभक्ति रुपी गर्भगृह तक नहीं पहुँच सकते हैं।

तो चलो,
आज से संकल्प करते हैं, कि

अब जगत के सर्व जीवों के साथ निस्वार्थ प्रेम, निर्मल प्रेम का संबंध बाँधूँगा। कोई मेरा अपमान करे, मेरे साथ अन्याय करे, मेरी अपेक्षा भंग करें

तो भी उसके साथ द्वेष या वैर की गाँठ नहीं बाँधूँगा।

Temper : A Terror – 11

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(नगर में फैली हुई "मारी" वह दूसरी कोई नहीं मगर खुद की बेटी राजकुमारी रत्नमंजरी है, ऐसी शंका राजा के मन-मस्तिष्क में जब हो चुकी थी। तब इस शंका के समाधान के लिए राजा अब क्या करते हैं? पढ़िए।)

नदी में बहते हुए पानी की तरह दो महीने बीत गये थे। अमर को अपने प्राणप्रिय मित्र मित्रानन्द की कोई खबर नहीं मिली थी।

"रत्नसार श्रेष्ठी!" रत्नसार श्रेष्ठी ने दो महीने तक अमर को अच्छी तरह संभाला हुआ था। अमर को एक भी चीज की कमी महसूस नहीं हुई थी।

"जी!" श्रेष्ठी ने विनयपूर्वक जवाब दिया।

"मुझे दिया हुआ मित्रानन्द का समय आज पूर्ण हो गया है। वो अभी तक आया भी नहीं है, और उसकी वीतक कथा भी हमें सुनने में नहीं आयी है। मुझे तो पक्का यकीन है कि, उसे मेरे पीछे कोई बड़ी आफत में..." कोयल का मीठा स्वर सुनाई दिया, उसमें अमर के आखिरी शब्द दब गये।

"अमर! देखिये!... कोयल भी आपको अशुभ बोलने के लिए मना कर रही है। सब अच्छा ही हुआ होगा।" शकुन-शास्त्र के जानकार श्रेष्ठी ने कहा।

"जो भी हो, पर मैं अपने मित्र को दिये हुए वचन को पूर्ण करूँगा। कल मेरा चिता प्रवेश तय है। आप नगर में घोषणा करवा दीजिए - एक मित्र के लिए अपनी जान देने वाले अमर की अमरगाथा मैं इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित कराना चाहता हूँ।"

श्रेष्ठी ने अमर की आँखों में दृढ़ निश्चय देखा। उसे पलटना असम्भव लग रहा था।

"हाँ जी!" कहकर वो अगले दिन की तैयारी में जुट गया।

काले घनघोर बादल जैसा धुआं चिता से निकल रहा था। श्रेष्ठी ने अग्निप्रवेश की सारी तैयारी कर रखी थी। पूरी रात श्रेष्ठी ने यही काम किया था।

लोगों के झुंड नगर के बाहर यह मित्रता के बेनमून उदाहरण को देखने उमड़ रहे थे। आग की तरह अमर के चिताप्रवेश के समाचार नगर में फैल चुके थे।

महापुरोहित विधिकारक के रूप में वहाँ उपस्थित था। राजा अब बूढ़ा हो चुका था, और पिछले एकाध महीने से उसकी तबीयत और ज्यादा बिगड़ गई थी, इसलिए वो आ नहीं सका था।

सुबह में उठकर अमर ने अंतिम बार प्रासाद में स्थित पुतली को गले लगाया।

"इस भव में भले ही हम ना मिल सके, पर अगले जन्म में हम अवश्य मिलेंगे।" ऐसी ध्वनि उसके हृदय से निकल रही थी।

मित्रानन्द मित्र की, अपने पास जो वस्तुएँ थी, उसे उसने आखरी बार स्पर्श कर लिया और अपने लिए शहीद हो चुके अपने मित्र के कल्याण के लिए उसने भगवान से प्रार्थना की। जैसे भगवान ने उसकी प्रार्थना सुनी हो, उसका सूचन करता हुआ फूल ऊपर से गिरा।

उसके बाद रत्नसार श्रेष्ठी ने उसे स्नान आदि जो चिताप्रवेश के लिए आवश्यक थे, वे कृत्य करवाये। और आखिरी बार उसे चिताप्रवेश के दु:साहस से वापस फिरने की विनती की। अमर का निर्णय अटल था।

"ॐ भूर्भुवस्वाहा:..." मंत्रोच्चार का राजपुरोहित ने प्रारंभ कर दिया था। मुहूर्त का समय अब ज्यादा दूर नहीं था। अमर चिता के पास, चंदन से चर्चित अंग के कारण सुबह के प्रकाश में सूर्य की तरह चमक रहा था। उसके मुख पर अटूट बल नज़र आ रहा था।

"अमर..." बंद आँखों से खड़े हुए अमर को राजपुरोहित की आवाज सुनाई दी। 'समय हो गया है। अग्निदेवता तेरे ग्रहण के लिए तत्पर हैं। प्रस्थान करो...' राजपुरोहित के स्पष्ट शब्दों को सुनकर शांति की लहर वहाँ खड़े हुए प्रेक्षकगण में फैल गयी।

अमर ने आखरी बार अपने मित्र को याद किया। कोई उसे बुला रहा हो, उसे ऐसा अनुभव हुआ। वह पीछे मुड़ा।

नदी में स्थित गीली रेती की तरह रत्नमंजरी और मित्रानन्द के चेहरे पर मैल जम गया था। पिछले कईं दिनों की थकान उनके शरीर पर साफ दिखाई दे रही थी।

मित्रानन्द ने रत्नमंजरी को जब अमर की, और खुद दो महीने में वापस ना आये तो चिताप्रवेश करेगा, यह बात बतायी थी, तब रत्नमंजरी ने मित्रानन्द को दिन-रात प्रयाण करते रहने की अनुमति दी थी।

अब सामने ही पाटलीपुत्र की सरहद दिखाई दे रही थी। मित्रानन्द ने आकाश की ओर दृष्टि दौड़ायी। सामने किसी जगह से काला डिबांग धुँआ निकलता हुआ दिखाई दे रहा था।

"आखरी गाऊ ही बचा है राजकुमारी! जरा त्वरा करो!" रत्नमंजरी ने अपनी सांडणी को ठेस लगाई और वह पवन की तरह उड़ने लगी। तेज रफ्तार से रास्ता कटता गया। मित्रानन्द को सामने धुंधले आकाश में ऊँचा प्रासाद दिखाई दिया।

यहीं से ही मित्रानन्द अमर से जुदा हुआ था। दोनों थोड़ा और करीब पहुंचे। बहुत सारे लोग वहाँ एकत्रित हुए हों ऐसा मित्रानन्द को लगा। मित्रानन्द ने आज के दिन तक की गिनती की। 2 महिने 1 दिन...

मित्रानन्द को पता चल गया कि क्या चल रहा है। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसे दूर से राज-पुरोहित का चमकता हुआ सिर दिखा। सूर्य के जैसे चमकता हुआ अपना मित्र भी वहाँ ही उसे दृष्टिगोचर हुआ। वह आँख बंद करके चिताप्रवेश के लिए तैयार हो रहा हो, ऐसा उसे नजर आया।

वह तीर की तरह अपनी सांडणी से उड़ा। तीर जैसे ही उसके शब्दों ने नीरव सी शांति का छेद कर दिया।

"अमर... अमर..." अनर्थ होने की आशंका से वह अपने हृदय के भरपूर जोश के साथ आवाज देता रहा।

अमर ने पीछे देखा।

दशहरे में लगने वाले आसोपालव के तोरण जैसे अश्रुओं के तोरण उपस्थित प्रजा की आँखों में बंध गये।

जिंदगी में पहली बार पाटलीपुत्र की प्रजा को एक अभूतपूर्व मित्र-मिलन निहारने को मिला था। अग्निदेवता ने भी मित्रों के स्नेह की आहूति से तर्पित हो गये हो ऐसा जताने के लिए अमर को आबाद मुक्त कर दिया था।

एक-दो घड़ी न जाने कितने समय तक दोनों मित्र एक-दूसरे के गले लगकर एक ही जगह पर खड़े थे। दोनों की आँखों में जनता के तोरण को भिगोने वाली मूसलाधार बारिश छायी हुई थी। एक अत्यंत आश्चर्यकारी घटना घटी थी पाटलीपुत्र के इतिहास में।

रत्नमंजरी एक कोने में खड़ी-खड़ी यह दो मित्रों के मिलन को देख रही थी। अमर की दृष्टि उस पर पड़ी। स्तम्भ में तराशी हुई पुतली के सौंदर्य से भी ज्यादा मनमोहक सौंदर्य रत्नमंजरी का था। वह मंत्र-मुग्ध वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था।

मित्र के हास्य ने उसे उसकी दुनिया से बाहर निकाला। उसे जो चाहिए थी, वह स्त्री स्वर्ग की अप्सरा की तरह सामने ही खड़ी थी।

"अब कौन-सी देरी है?" मित्रानन्द ने अमर को इशारा किया। यह भाभी तुझे संपूर्णतया समर्पित है। इसकी कथा बहुत लंबी है। पर अभी इसका अवसर नहीं है। मौज का अवसर है।" मित्रानन्द के शब्द सुनकर अमर हँस पड़ा।

वह रत्नमंजरी की ओर गया।

"तू तैयार है? मित्रानन्द ने तुझे सारी बातें बतायी ही होगी ना?" रत्नमंजरी नत मस्तक हो गई।

"प्राणनाथ! ये प्राण आपके ही हैं। आपको जो करना हो, वह कर सकते हैं" उसने अपना हाथ अमर के हाथ में रखा।

दोनों अग्नि के सामने गये। राजपुरोहित वहाँ खड़े ही थे। अग्नि की साक्षी में दोनों ने गांधर्व विवाह कर लिया। लोगों में आनंद की लहर दौड़ गई। मौत का मंच विवाह के मंडप में परिवर्तित हो गया।

फूलो में गुनगुन करते हुए भँवरों की तरह सभी लोग अंदर-अंदर गुनगुना रहे थे।

सभी के मुँह में एक ही दिन में घटित विविध घटनाओं की बातों की ही चर्चा हो रही थी।

"अमर का तो भाग्य है भाई!... और वह रत्नमंजरी! जैसे कि साक्षात स्वर्ग की रंभा! और वह मित्रानन्द! बृहस्पति को भी पीछे छोड़ दे वैसी उसकी बुद्धि! क्या समन्वय रचा है परमात्मा ने!"

अचानक ही गुनगुनाहट को चीरता हुआ घंट का घंटारव सुनाई दिया। सभी की बातें स्तंभित हो गई। मित्रानन्द, अमर और रत्नमंजरी का भी वार्ता-लाप रुक गया। बेताब प्रजा राजमार्ग की और देखने लगी।

इस घंट का उपयोग केवल दो ही अवसरों पर होता था। या तो युद्ध के समय, या राजा के मरण के समय पर। "क्या हुआ होगा?" सभी के मन में एक ही विचार दौड़ने लगा।

नगर के दरवाजे से सैनिक घोड़े पर आरुढ़ होकर भागते हुए दिखाई दिये। आगे जो सेनाधिपति था, उसने अपना घोड़ा राजपुरोहित के सामने खड़ा किया। वह घोड़े की लगाम पकड़कर नीचे उतरा।

राजपुरोहित के पास आकर राजपुरोहित के कान में कुछ बोला। राजपुरोहित के चेहरे की रेखाएँ बोले गये शब्दों के साथ बदलती गई। बला-धिपति अपनी बात कहकर घोड़े के पास खड़ा रह गया।

"प्रजाजनो!" राजपुरोहितने अपनी पहाड़ी आवाज में गर्जना की! "आज बहुत दु:खद समाचार यह बलाधिपति लाये हैं। हमारे राजा इन्द्र महल की शोभा बढ़ाने प्रयाण कर चुके हैं।"

(क्रमशः)

जिनशासन का हृदय

जैन प्रोफेसर तन्मयभाई एल. शाह

एक व्यक्ति डॉक्टर के पास दिखाने के लिए गया। डॉक्टर ने उसका Full body check-up किया और कहा कि आपके शरीर का हर अंग Check करके मुझे ऐसा लगता है कि:

मस्तक : आपका मस्तक बराबर है, कोई माइग्रेन या हेमरेज नहीं है, उसका कोई लक्षण भी नहीं है, और ब्रेन भी पावरफुल है।

आंख : आपकी आंखों में मोतियाबिंदु या झामर नहीं है, चश्मे की जरूरत नहीं है, अंधापन आने का भी कोई लक्षण नहीं है, आँखें बहुत अच्छी तरह कार्य रही हैं, चिंता की कोई बात नहीं है।

कान : बहरापन नहीं है, मशीन आदि साधनों की जरूरत नहीं है, कुछ भी खराबी नहीं है।

नाक : सूंघने या सांस लेने में आपका नाक Active है, कोई प्रोब्लेम नहीं है इसलिए ऑक्सीजन की बोतल की भी कोई जरूरत दिखाई नहीं पड़ती है।

दांत : चौकठा बिठाने की आवश्यकता नहीं लगती है, पायरिया होने के भी लक्षण नहीं है, दांत बहुत मजबूत है, एकदम परफेक्ट है।

गला : टॉन्सिल जैसी कोई बीमारी की संभावना दिखाई नहीं पड़ती, गले की सभी ग्रंथियाँ सब व्यवस्थित रूप से कार्यरत हैं और मजबूत है।

फेफड़ा : इसमें कोई भी नुकसान नहीं है, लीवर आदि का प्रोब्लम आने का चान्स बिल्कुल नहीं है।

किडनी : अच्छी तरह चल रही है फेल होने की कोई बात नहीं है। डायलिसीस भी करानी नहीं पड़ेगी। वैसे तो एक किडनी पर भी जी सकते हैं, आपकी तो दोनों बराबर है।

आंत : प्रोस्टेट आदि आने की कोई भी संभावना नहीं है। लंबे समय तक अच्छे से चलेगी। आपके यूरीन और रक्त में भी कोई खराबी नहीं लगती, और सुगर या थाइरोइड का अंश भी मालूम नहीं पड़ रहा। आपका शरीर हर तरह से एकदम सुपरफाइन है।

इतना सब अच्छा सुनकर वह व्यक्ति बहुत खुश हुआ। लेकिन अचानक डॉक्टर ने चौंकाने वाला खुलासा करते हुए कहा कि,

अब तक आपका पूरा शरीर मैंने ठीक से देख लिया है, मुझे कोई भी खराबी नहीं दिखी। मगर

अब जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह ध्यान से सुनना, मन को मजबूत बनाना। आपको कोई दवाई की भी जरूरत नहीं है, फिर भी एक बहुत बड़ा प्रोब्लम है। वैसे आपका पूरा शरीर ठीक है, फिर भी आप ज्यादा जिंदा नहीं रह पाएँगे, क्योंकि आपका कोलेस्ट्रोल बहुत ज्यादा है, और हार्ट का बड़ा प्रोब्लम आ चुका है, जो ज्यादा नहीं चल सकता। बहुत ही कम समय में आपको इस दुनिया से अलविदा होना है, हार्ट कभी भी बंद पड़ सकता है, बस संभल जाइए।

अब बोलिए! उस मरीज का क्या होगा?

उसकी तो खुशी से गम में ट्रान्सफर हो गयी।

मनुष्य अपने शरीर के अन्य किसी अंग के बिना जिंदा रह सकता है, और कदाचित तकलीफ आने पर दवा से ठीक भी हो सकता है, और Longlife जी सकता है। लेकिन हार्ट कमजोर हो जाए तो क्या होगा? कुछ नहीं...

शरीर में जितना महत्व हार्ट का है उतना ही महत्व जिनशासन में सम्यग्दर्शन का है, अगर सम्यक्त्व ही नहीं है, तो बाकी सब कुछ काम नहीं।

कितना भी धर्म कर लो, दान कर लो, तप-जप कर लो, सामायिक-प्रतिक्रमण कर लो, पूजा कर लो, व्रत-नियम रख लो, मगर यदि उसमें सम्यग्दर्शन नहीं है, तो ये सब कुछ बिना हार्ट के शरीर जैसा है, निष्फल है। और अगर सम्यग्दर्शन पूर्वक छोटी-सी भी क्रिया है, तो वह प्राणवंत है, मोक्ष की ओर कदम बढ़ाने जैसा है।

आत्मा के लिए सम्यग्दर्शन ही हृदय है। सम्यक्त्व – मन, हृदय या आत्मा की चीज है, ज्ञान – वचन की चीज है, और चारित्र – काया द्वारा पालन की चीज है। यदि ज्ञान और चारित्र आ जाए, चला भी जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता, एक बार चल जाता है। किंतु सम्यग्दर्शन के बिना तो नहीं चलेगा।

जैसे हृदय जीवंत हो तो शरीर जीवित रहता है। बेहोशी में मृतप्रायः आदमी मरा हुआ ही घोषित होता है। वैसे ही श्रद्धा जीवंत हो तो क्रिया-धर्म सब जीवंत रहता है। श्रद्धा के बिना क्रिया-धर्म संमूर्च्छिम बन जाता है। इसलिए क्रिया और धर्माराधना को जीवंत बनाने के लिए श्रद्धा जरूरी है, और श्रद्धा की प्राप्ति के लिए सम्यक्ज्ञान जरूरी है।

हार्ट ऑफ जिनशासन यदि सम्यग्दर्शन है, तो सम्यग्दर्शन के लिए सम्यक्ज्ञान भी उतना ही जरूरी है।

जिनशासन क्या है? कैसा है? मुझे तारने वाला ही है, इसलिए इसकी आराधना बहुत जरूरी है। शासन प्राप्ति का आनंद होना चाहिए, मैं शासन की आराधना कर सकता हूँ, उसका आनंद आना चाहिए। उच्चतम देव, गुरु और धर्म मिला उसकी कीमत क्या है, यह भी पता होना चाहिए, तभी हम सम्यग्दर्शन को टिका पाएँगे।

आज के वातावरण में सम्यग्दर्शन पाना कदाचित् दुर्लभ लगता होगा, मगर धर्मार्थी जीव के लिए उतना ही सुलभ है। इसलिए हृदय को जीवित बनाओ, जिनवचन को सर्वथा सत्य मानकर स्वीकार करो।

LEARNING
MAKES A MAN PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160